दिनांक 28 जनवरी, 1987

सं. श्रो. वि./एफ.डी./64-85/4076. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० ईलाईट सँरामिनस प्रा० लि० प्लाट नं० 161, सैक्टर-24, फरीदाबाद के श्रीमक श्री रघबीर, मार्फत कार्यालय अन्तरास्ट्रीयवादी मजदूर यूनियन जी → 162 इन्दरा नगर सैक्टर 24, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई प्रौद्योगिक विवाद है।

श्रौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं।

इस लिये, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रीद्यित्यम 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्याल इसके द्वारा सरकारी श्रीद्यसूचना सं० 5415-3-श्रम 68/ 15254, विनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रीद्यसूचना सं० 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्ते श्रीद्यसूचना की धारा 7 के श्रदीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद की विवादग्रस्त या उससे मुस्गत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाद तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उवस श्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है।

• नया श्री रघवीर की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं गैर-हाजिर हो कर नौकरी से पुर्नग्रहणाधिकार (लियन) खोया है इस बिन्दु निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदौर है ?

सं. श्रो. वि./एप.डी./64-85/4083. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० ईलाईट सैरामिनस प्रा० लि० प्लाट नं० 161, सैंक्टर 24, फरीदाबाद के श्रीमक श्री बैंजू मार्पंत अन्तराष्ट्रीय बादी मजदूर यूनियन, जी-161 इन्दरा नगर, सैंक्टर 7, फरीदाबाद तथा उसके प्रबच्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है।

ंग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं।

इसलिये, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा 'प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं० 5415-3-श्रम 68/ 15254, दिनांका 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रीधसूचना सं० 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांका 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रीधसूचना की घारा 7 के श्रीधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीखे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है।

क्या श्री बैंजू की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं गैर हाजिर होकर नौकरी से पुर्नग्रहणाधिकार (लियन) खोया े हैं इस बिन्दु पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 27 जनवरी, 1987

सं को वि क कुरू | 5-87 | 3793 - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं वी शाहबाद कारमसं कोपरेटिय मार्किटिग-कम-प्रोसेसिंग सोसाईटी लि॰ शाहबाद मारकण्डा, जिला कुरुक्षेत्र के श्रीमक श्री प्रेम नाथ पुत्र श्री साधु राम मार्फत श्री राजेश्वर नाथ 2655 टिम्बर मार्किट, अम्बाला छावनी तथा, उसके प्रवन्धकों के बीच इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है।

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए अब औद्योगिक विवाद श्रिष्टिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करतें हुयें हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 3(44)-84-3-श्रम, दिनांक 18 अर्थल, 1981 धारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के श्रिष्टीन गठित श्रम न्यायालय, अम्बाला को विवाद प्रस्त या उससे सम्बंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है।

जक्या श्री प्रेम नाथ की सेवा समाप्ति/छंटनी न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?